

नव दुर्गा के पाठ का छठा है यह अध्याय  
जिसके पढ़ने सुनने से जीव मुक्त हो जाए  
ऋषिराज कहने लगे सुन राजन मन लाये  
दूत ने आकर शुम्भ को दिया हाल बतलाये

सुन कर सब व्रतांत को हुआ क्रोध से लाल  
धूम्र-लोचन सेनापति बुला लिया तत्काल  
आजा दी उस असुर को सेना लेकर जाओ  
केशो हो तुम पकड़ कर, उस देवी को लाओ

पाकर आजा शुम्भ की चला दैत्य बलवान  
सेना साथ हजार ले जल्दी पौहचा आन

देखा हिमालय शिखर पर बैठी जगत आधार  
क्रोध से तब सेनापति बोला यु ललकार

चलो खुशी से आप ही मम स्वामी के पास  
नहीं तो गौरव का तेरे कर दूंगा मैं नाश  
सुने भवानी ने वचन बोलो तज अभिमान  
देखू तो सेनापति कितना है बलवान

मैं अबला तव हाथ से कैसे जान बचाऊ  
बिना युद्ध पर किस तरह साथ तुम्हारे जाऊ  
लड़ने को आगे बढ़ा सुन कर वचन दलेर  
दुर्गा ने हुंकार से किया भस्म का ढेर

सेना तब आगे बढ़ी चले तीर पर तीर  
कट कट कर गिरने लगे सिर से जुदा शरीर  
माँ ने तीखे बाणों की वो वर्षा बरसाई  
दैत्यों की सेना सभी गिरी भूमि पे आई

सिंह ने भी कर गर्जना लाखों दिए संहार  
सीने दैत्यों के दिए निज पंजों से फाड़  
लाशों के थे लग रहे रण भूमि में ढेर  
चहु तरफा था फिर रहा जगदम्बा का शेर

धूम्रलोचन और सेना के मरने का सुन हाल  
दैत्य राज की क्रोध से हो गई आँखें लाल  
चंड मुंड तब दैत्यों से बोला यु लकार  
सेना लेकर साथ तुम जाओ हो होशियार

मारो जाकर सिंह को देवी लाओ साथ  
जीती गर ना आये तो करना उसका घात  
देखूंगा उस अम्बे को कितनी बलवाली  
जिसने मेरी सेना यह मार सभी डाली

आजा पाकर शुम्भ की चले दैत्य बलवीर  
'चमन' इन्हें ले जा रही मरने को तकदीर

बोलिए जय माता दी  
बोलिए जय मेरी माँ वैष्णो देवी की जय  
बोलिए जय मेरी माँ राज रानी की जय